11/11/20-विषय- हिन्दी नाम - डॉ० साधना कुमारी Time - 10:30 to 11:20

Lecture-1

मीराबाई के संक्षिप्त परिचय

जीवन-परिचय - कृष्ण भक्त कवियों में मीराबाई का नाम सर्वोच्च स्थान पर है। मीराबाई का जन्म राजस्थान में मेड़ता के निकट कुड़की ग्राम के प्रसिद्ध राज परिवार में सन् 1498 ई० में हुआ था। उनके पिता का नाम रतन सिंह था। मीरा का विवाह केवल 12 वर्ष की आयु में चित्तौड़ के राणा राणा सांगा के पुत्र कुँवर भोजराज के साथ हुआ था। दुर्भाग्यवश विवाह के 7-8 वर्ष बाद ही मीरा पर वैधव्य के दुःख का पहाड़ टूट पड़ा। मीरा के बचपन में ही उनकी माता का देहांत हो गया था।

मीरा बालकाल से ही कृष्ण भक्ति में लीन रहती थी, पर पति की मृत्यु के बाद तो मीरा ने अपना सारा जीवन कृष्ण-भक्ति में ही लगा दिया। वे साधु-संतों के सत्संग में रहने लगीं। शीघ्र ही उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। राजघराने की एक रानी का साधु-संतों से मिलना-जुलना और कीर्तन करना उनके परिवार वालों को अच्छा नहीं लगा। उन्हें तरह-तरह की यातनाएँ दी गईं। अंत में तंग आकर मीरा ने मेवाड़ छोड़ दिया और मथुरा-वृंदावन की यात्रा करते हुए द्वारिका जा पहुँची। वहाँ वे भगवान् रणछोड़ की आराधना में लीन हो गईं।

मीरा लौकिक बंधनों से पूर्णतः मुक्त होकर निश्चिंत भाव से साधु-संगति और कृष्ण पूजा-उपासना में अपना समय व्यतीत करने लगीं। ऐसी परिस्थिति में गा उठीं-

"मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई
जाके सिर मोरमुकुट मेरो पति सोई"।

लौकिक सुहाग मिटा तो मीरा ने अलौकिक सुहाग पा लिया वह तो "पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे" की अवस्था में आ गई। देवर राणा विक्रमादित्य ने जहर का प्याला भेजा और मीरा उसे गिरधर का चरणामृत समझ कर पी गई। ऐसा अनुमान है कि मीरा ने 1546 ई० के आस-पास अपना नश्वर

शरीर त्यागा।

रचनाएँ = मीरा ने मुख्यतः स्फुट पदों की ही रचना की है। ये पद 'मीराबाई की पदावली' नाम से संकलित हैं। इस पदावली से ही कुछ पद छाँट कर लोगों ने 'राम मुलार', 'राग सोरठ संग्रह', 'राग गोविंद' आदि संकलन बना डालें। सच यही है कि भिन्न-भिन्न रागनियों में गाये जाने वाली भक्तिपूर्ण 'पदावली' मीरा की प्रमाणिक रचना है।

मीरा कृष्णभक्त थीं परन्तु किसी संप्रदाय विशेष में दीक्षित थीं, इसका कोई लिखित प्रमाण नहीं मिलता। वस्तुतः उस समय की जो विचारधारा और भक्ति उपासना पद्धति प्रचलित थी। मीरा ने उनका अनुकरण किया। उन्होंने लौकिक प्रेम से अलग आध्यात्मिक प्रेम कि लौ जलाई और अपने संकल्प तथा अन्तरतम की पीड़ा को सरल शब्दों में व्यक्त किया -

मैं तो साँवरे के रंग राची।

साजि सिंगार बाँधि पग घुँघरु, लोक लाज तजि नाची।

वे शुद्ध भक्त थी और बिना किसी शर्त साँवरे के रंग राची थीं। उनमें भक्ति के प्रति सच्ची लगन है और इष्टदेव के प्रति असीम अनुराग। इनकी भक्ति में सब संबंधों को तोड़कर इष्टदेव के प्रति समर्पण है। गोविंद की भक्ति में बुरी तरह लीन हैं। मीरा की प्रणयानुभूति और विरह की पीड़ा रहस्यवाद की भावना से ओत-प्रोत है। गीति काव्य की दृष्टि से मीरा की रचनाएँ दिव्य हैं। मीरा की भाषा राजस्थानी और ब्रज भाषा है। मधुरता और सरलता इसके पदों की प्रधान विशेषता है।